1

S15

9:43 Am

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-11

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 HL-2411

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक* : 250 *Maximum Marks* : 250

नाम (Name): सिद्धार्थ कुमार मीणा

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]: 3 6 0 0 2 7 7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ **टिप्पणी** (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

drishti | दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

सिद्ध साहित्य वस्तुत: वाममार्गी बौद्धों द्वारा 7-8 वीं शताब्दी से 11-12 वीं शताब्दी के मध्य, मध्यदेश के पूर्वी भाग के रचित धार्मिक प्रचार की रचनाएं हैं। जैसे - सरहपा, कण्हपा, लुइपा, विरूपा आदि के दोहा, चर्यापद

19 वीं शताब्दी से पूर्व खड़ी बोली का सर्वप्रथम प्रारंभिक लक्षण सिद्धों के सामाजिक प्रगतिशीलता युक्त काव्य मे दिखाई देता है। जैसे लाड़ चर्यापद

"पंडिअ सअल सत्थ बक्खाणअ
देहहि बुद्ध बसंत ण जाणइ।"

उपरोक्त चर्यापद मे

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(i) 'न' का 'ण' होना

(ii) 'हि' विभक्ति का प्रयोग

(iii) अकारान्त होने की प्रवृत्ति

आदि ~~आज~~ बाद की विकसित खड़ी बोली के लक्षण हैं।

फलत: सिद्धों के काव्यों ~~की प्रतीकात्मक~~ रचना पुष्ट संध्या भाषा और कबीर, नाथ साहित्य, मीरा के काव्य का आधार बन खड़ी बोली को विकसित करती है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) 'बुंदेली' बोली

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

बुंदेली हिंदी मूलत: बुंदेलखण्ड के क्षेत्र में बोली जाने वाली हिंदी है जिसका विकास संस्कृत के वियोगीकरण की प्रक्रिया से उपजी पूर्वी हिंदी वर्ग से हुई है।

मूलत: बुंदेली हिंदी अवधी की उपभाषा बोली है जिसमे अवधी के ही सारे गुण समाहित है लेकिन विद्वानों का एक वर्ग इसे इसकी विशिष्टताओं के लिए स्वतंत्र ~~भाव~~ बोली का दर्जा प्रदान करता है।

बुंदेली हिंदी ~~की~~ विशेषताएँ : →

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ध्वनि के स्तर -> ण > न होना (पाणी > पानी)
-> ~~ल~~ > र
-> ~~अ~~ संख्यावाचक प्रयोग [अठ्ठारह, ~~अस्सी~~ बारह]
↳ ए, ओ का सामान्य प्रयोग
↳ उच्चारबहुलता।

व्याकरण : ->

* ~~संज्ञा व्याकरण~~
* संज्ञा के तीन रूप - लरका, लरकवा, लरकउना
* सर्वनाम के -> मोहिं, हमार, हमें, आपको, हमहिं जैसे विकास
* बहुवचन के लिए -> न्ह, निह, न के (ब्रवचन) द्वारा हम लोग, लोकन का प्रयोग।
* लिंग बदलाव के लिए (पुल्लिंग से स्त्रीलिंग) (२लिंग) प्राय: न, आनी, नी, इन का प्रयोग
उदा० पंडित > पंडितानी
* कारक व्यवस्था अवधी की तरह ही है।
शब्दावली के स्तर पर देशज व तद्भव शब्द प्रधान है वहीं तत्सम शब्द को बढ़े है।

(ग) पहाड़ी हिन्दी

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

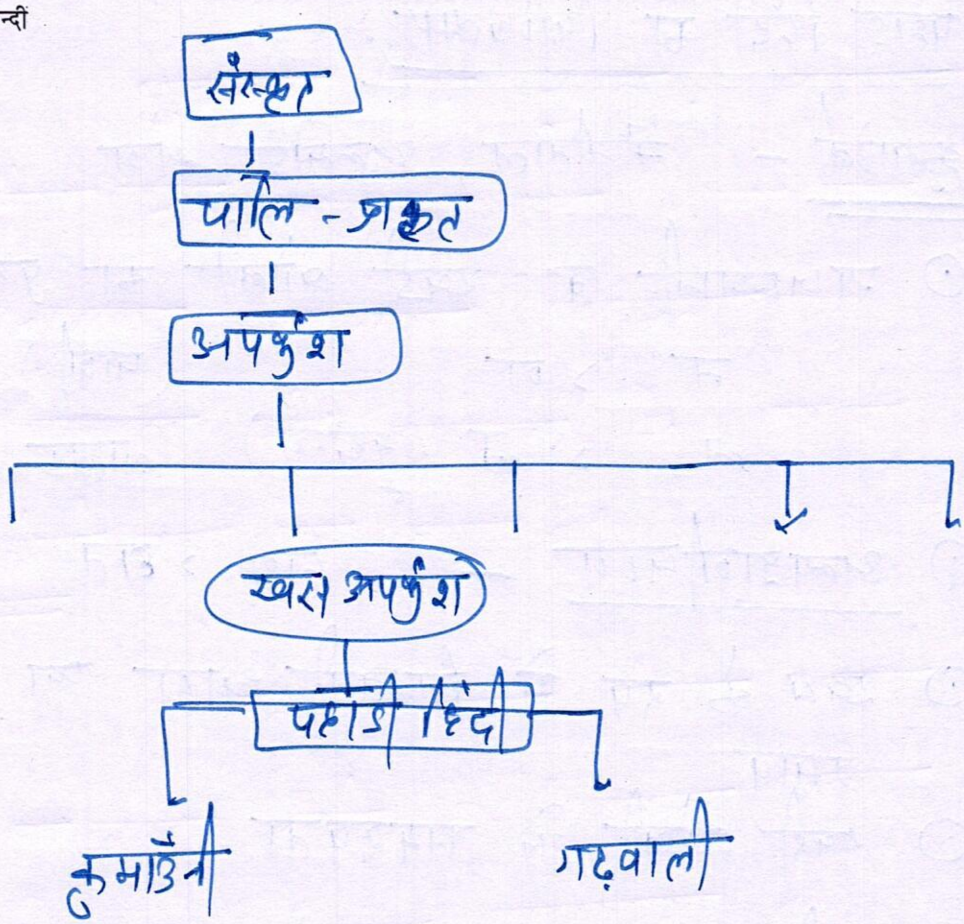

पहाड़ी हिंदी का उद्भव

उत्तराखण्ड के कुमाऊं व गढ़वाल संभाग में बोली जाने वाली पहाड़ी हिंदी मूलतः खस अपभ्रंश का स्थानीयकरण है। जो कुमाऊंनी व गढ़वाली के रूप में विभक्त होती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पहाड़ी हिंदी की विशेषताएं :—

कुमाउंनी – नैनीताल, अल्मोड़ा क्षेत्र

- राजस्थानी व खड़ी बोली का प्रभाव–
  - न > ण (पाणी)
  - ल > ळ (मूर्धन्य) बाळक
- अल्पप्राणीकरण – हाथ > हात
- खस के रूप में तिब्बती धारा का प्रभाव
- खड़ी बोली से समरूपता

गढ़वाली :— गढ़वाल क्षेत्र

- भाषायी प्रभाव आस पास के क्षेत्र का विद्यमान है।
- 'ओं' का प्रयोग → घोड़ा > घोड़ों
- फलत: पहाड़ी हिंदी भारत में संस्कृत के वियोगीकरण व स्थानिक प्रभाव से स्थानीयकरण का परिणाम है।

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

रहीम हिंदू व मुस्लिम समन्वय के मुस्लिम कृष्ण भक्त कवि हैं जिनकी नीति, भक्ति, श्रृंगार की रचनाओं मे कुछ सहित खड़ी बोली का प्रारंभिक रूप झलकता है।

नायिका भेद, साहित 'मदनाष्टक' उनका प्रमुख काव्य है। मदनाष्टक मे खड़ी बोली स्पष्ट दिखाई देती है।

रहीम के काव्य मे खड़ी बोली

① प्राय: खड़ी बोली मिश्रित रूप मे पाई जाती है।

" रहिमन पानी राखिए बिनु पानी सब सून
पानी बिना न ऊबरै मोती मानुस चून।"

drishti | दृष्टि The Vision

(2) प्राय: खड़ी बोली प्रयुक्त के स्तर पर है जबकि व्याकरण का आधार ब्रज व अवधी को बनाया है।

(7) 'मदनाष्टक' में विशुद्ध खड़ी बोली का भाषा (व्याकरण) व बोली के स्तर पर प्रभावक है।

"पक्षि परम साँवरे को मिलाओ
अमृत जल प्याला हमें पिलायो।"

फलत: रहीम के काव्य में मूलत: ब्रज व अवधी विशेषत: खड़ी बोली का विकास हुआ।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अवधी अर्धमागधी अपभ्रंश से उपजी पूर्वी हिंदी की वह बोली है जो प्राचीन काल मे कोशली के नाम से जानी जाती थी। आज यह अवध क्षेत्र मे प्रमुखत: बोली जाती है।

साहित्यिक भाषा के रूप मे अमीर खुसरो की 'खालिक बारी' मे पहले प्रमाण के बाद उक्ति-व्यक्ति प्रकरण, प्राकृत पैंगलम मे भी लक्षण दिखाई देते है।

अवधी का मूल विकास सूफी संतो की धारा व राम काव्य धारा मे हुआ है, जो बाद मे ब्रज भाषा द्वारा प्रतिस्थापित कर दी गयी।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा का योगदान:

सूफी संत भावनात्मक रहस्यवादी संत हैं जो ईश्क-हकीकी से ईश्क मिजाजी तक की यात्रा कर ईश्वर के साथ फना होने का काव्य रचते हैं।

प्रारंभिक स्तर पर 'मुल्ला दाऊद' की रचना 'लोरिकहा' है जिसने अवधि भाषा को एक स्तर में काव्य से साहित्यिक भाषा की ऊँचाई प्रदान की। उनकी एक सुंदर पंक्ति है -

" दाउद कवि जो चंदा गाई।"

प्रारंभिक रचना के इसके अलावा कुतबन की 'मृगावती' भी महत्वपूर्ण रचना है।

अवधी का मूल विकास हुआ है

drishti दृष्टि The Vision

मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा जहाँ उन्होंने अवधी के 14 रत्नाकरों की जैसे - पदमावत, कन्हावत आदि।

पदमावत का अवधी के विकास में योगदान उसे विशाल बना देता है। इस संदर्भ में आचार्य शुक्ल जी का कथन है -

"अवधी की खालिस, बेमेल मिठास के लिए पदमावत का नाम सदा लिया जाता रहेगा।"

जायसी ने अवधी के दपंगरा, मरवट नीक जैसे लोक शब्दों का योग किया बल्कि लोकोक्ति, मुहावरों का समावेश कर अवधी को मिठास प्रदान की। जैसे - "नैन सुभाहिं जैसे मरवट नीक"

- 'हिय फटा' व "मुंधी अँगारि न निकसे धीऊ" जैसे मुहावरों का प्रयोग।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

जायसी की अवधी संस्कृत की प्रभावयुक्तता रहित है यद्यपि इसमे प्राकृत-अपभ्रंश के कुछ प्रयोग मिलते हैं। जैसे -

पृथ्वी > पृहुमि, दिनकर > दिनअर'

जायसी द्वारा पदमावति मे वियोग पक्ष से अवधी मे विरह का समावेश, अलंकार व उपमानों की सहजता, चित्रात्मकता उसे साहित्यिक भाषा मे उच्चता प्रदान करती है जहाँ न केवल वीररस बल्कि प्रकृति का भी सक्रिय प्रयोग हुआ है। उदा० -

"पदमावति से कहेहु विहंगम"

" ~~तू फिर फिर डोले को~~ "

" यह तन जारौ मार कै, तेहि उड़ाव . . . . . . कंत धरै जहँ पांव।"

जायसी के बाद अनुराग बाँसुरी, जैसे लेखन हुए लेकिन समय के साथ तुलसी के प्रभाव संस्कृतकरण बढ़ता गया।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अनुदित लेखन से तात्पर्य लेखन की वह प्रक्रिया जिसमे मूल रचना नहीं की जाती है बल्कि अन्य भाषाओं के ग्रंथो का अनुवाद किया जाता है।

हिंदी के विकास, प्रचार-प्रसार, राष्ट्रभाषा सहित राजभाषा के रूप मे स्थापित करने के लिए इस धारा का अभिन्न योगदान रहा है।

वैसे तो अनुदित लेखन छपाई के आविष्कार (पुर्तगालियों द्वारा) के बाद मुख्य रूप से विकसित हुई है।

हिंदी मे अनुदित लेखन बहुविध व बहुआयामी रणनीति रही है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हिंदी में अनुदित लेखन

विषय ⇒
1. धर्म
2. विज्ञान व तकनीकी
2. संस्कृति
3. प्राचीन ग्रंथ

अनुवादक ⇒
1. ईसाई मिशनरी व अंग्रेज
2. समाज सुधारक
3. राष्ट्रवादी नेता
4. अन्य
5. सरकार

अनुवाद के लिए तत्व ⇒
1. भाषा बोली का विकास
2. शब्दावली

प्रारंभ में ईसाई मिशनरियों द्वारा बाइबिल व न्यू टेस्टामेंट का अनुवाद किया ताकि धर्म प्रचार हो। अंग्रेजों ने भी अपने अंग्रेजी रचनाओं को खड़ी बोली हिंदी में अनुवादित कर अहम योगदान किया। दिलचस्प है कि अंग्रेजों ने हिंदी के

drishti | दृष्टि The Vision

भी अंग्रेजी में अनुवाद किया। (वितापदेश, गीता आदि)

अनुवाद का एक प्रमुख रूप समाज सुधारकों द्वारा प्राचीन संस्कृत ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद का प्रचार बढ़ाना रहा। उदा॰ :- राजा राम मोहन राय द्वारा पुराणों की हिंदी में व्याख्या।

इसके बाद वर्तमान में देखें तो विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्रों में हिंदी में मूल लेखन का अभाव स्वत: अनुवाद की ओर ले जाता है। जिसमें गुणाकर मुले, विष्णु नालीकर का योगदान अहम रहा है। जिन्होंने विज्ञान के विषयों में न केवल लिखा बल्कि महत्वपूर्ण अनुवाद भी किया।

महात्मा गांधी, तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेताओं के योगदान के साथ-साथ शब्दावली व द्विभाषी कोष का विकास निर्णायक रहा।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) सर्वनाम और उसके भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहा जाता है, ये पढ़न मे आसानी पैदा करते हैं।

उदा० - 'राम ने कहा कि राम, राम के भाई ने मिलने राम के भाई के घर जायेगा।'

↓

'राम ने कहा कि वह, अपने भाई से मिलने उसके घर जायेगा।

अत: स्पष्ट है कि यहां पर वह, अपने, उसके का प्रयोग पढ़न को आसान बना देता है। यही सर्वनाम है।

सर्वनाम के प्रकार

- पुरुषवाचक
- संबंधवाचक
- अनिश्चयवाचक
- निश्चयवाचक
- प्रश्नवाचक
- निजवाचक

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

पुरुषवाचक सर्वनाम : → हिंदी मे 3 पुरुष उत्तम, मध्यम व अन्य पुरुष माने जाते है।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मै	हम
मध्यम	तू, तेरा	तुम, तुम्हारा
अन्य	वह	वे

अनिश्चयवाचक – वह सर्वनाम जो संज्ञा के निश्चित होना नहीं बताता है। उदा० - 'कोई है।'
- 'कुछ तो है।'

निश्चयवाचक - जो निश्चय वाला बोध कराये। जैसे – यही, वही, वोही

प्रश्नवाचक :— जो संज्ञा के संदर्भ मे प्रश्न पूछे।

उदा० - राम कहाँ गया? [राम अयोध्या गया]
(संज्ञा)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निजवाचक सर्वनाम :- जो सर्वनाम परस्पर निजता का बोध कराये।

उदा॰ - वह मेरा, अपना पैन है।

संबंधवाचक - जो सर्वनाम जो वाक्यों का संबंध स्थापित करे। जिसमे का, के, की का प्रयोग हो।

उदा॰ 'राम का भाई जो कि विद्यालय नहीं जाता है।'

सर्वनाम अविकारी रहते है तथा विकार पैदा करते हैं, साथ ही ~~[illegible]~~ पूर्वी हिंदी के कुछ विशिष्ट प्रयोग यथा (तुम → तुम लोग, हम → हमलोग) वही प्राय: तू, तुम की जगह सम्मानजनक आप का प्रयोग होता है।

मूलत: हिंदी की सर्वनाम व्यवस्था वैज्ञानिक है व सर्वत्र प्राय: समान ही

drishti | दृष्टि The Vision

3. (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राष्ट्रभाषा के रूप में किसी भाषा का तात्पर्य लोगों के आत्मिक लगाव की भाषा जो सांस्कृतिक एकता धारण करती हो।

उदा० – फ्रांस में फ्रेंच, चीन में मंदारिन

भारत में आजादी से पूर्व स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने पर आम सहमति स्थापित बन चुकी थी। हिंदी राष्ट्रभाषा मात्र हिंदी भाषियों के योगदान से संभव नहीं थी, इसमें गैर-हिंदी भाषी राज्यों, लोगों का अभिन्न योगदान रहा है। महाराष्ट्र में तिलक द्वारा तिलक कोट/बयान, सावरकर द्वारा समरथ बारखड़ी हो या कालेलकर द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा व देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि बनाने के योगदान निर्णायक है।

हिंदी के विकास में गैर-हिंदी भाषी राज्य

- महाराष्ट्र
- तमिलनाडु
- कर्नाटक
- आंध्रप्रदेश
- केरल
- बंगाल

तमिलनाडु का योगदान :—

हिंदी सम्मेलन 1918 (इंदौर) के बाद गांधीजी ने जब देवदास गांधी को तमिलनाडु भेजा तो इसमें धारा चल पड़ी।

तमिलनाडु के चक्रवर्ती राजगोपालाचारी सहित वैद्यनाथ अय्यर जैसे व्यक्तियों ने अहम योगदान दिया।

तमिलनाडु में राजगोपालाचारी के प्रस्ताव पर हिंदी प्रचार सभा का नाम

'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' रखा गया। इस सभा ने 'हिंदी प्रेस' की स्थापना, 'हिंदी प्रेमी मंडल' की स्थापना की। तमिलनाडु के परिषद विद्यालयों मे हिंदी का प्रचार किया व मदुरई इसका केंद्र बना। राजगोपालचारी ने 1937 के कांग्रेस मद्रास सम्मेलन मे केवल कराया बल्कि अनेक प्रांतीय भाषाओं मे कांग्रेस का कार्य करना निर्धारित किया।

कर्नाटक :- कर्नाटक मे दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की शाखा स्थापित कर हिंदी प्रचारकों व प्रशिक्षकों का आधार बढ़ाया। बेलगांव सम्मेलन (1924) के बाद बेलगांव, बैंगलोर सहित कई प्रमुख

drishti | दृष्टि The Vision

हिंदी के केंद्र बने।

आंध्रप्रदेश :- नाट्याचार्य कृष्णास्वामी द्वारा अपने नाटकों से प्रारंभ कर हिंदी का विकास प्रारंभ किया जिसे जान्हयाल शिवशंकर शास्त्री, पट्टाभिसीतारमैया आदि ने आगे बढ़ाया।

चाहे हिंदी ⇄ तेलुगु कोष रचना हो या नगर परिषद व विद्यालयों मे हिंदी की अनिवार्यता हो आंध्र प्रदेश ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने मे निर्णायक योगदान दिया।

केरल : 'दामोदरन उण्णिन्नी' द्वारा प्रारंभ व केरल-प्रांतीय-प्रचार सभा का गठन जिसने हिंदी प्रचारकों सहित हिंदी को विद्यालयों मे प्रसारित किया।

बंगाल :- बंगाल लोग के सभी नेता बंकिमचंद्र चटर्जी, आनंदमोहन बोस, सुभाषचंद्र बोस सभी प्रारंभ से ही हिंदी आंदोलन के प्रबल समर्थक रहे।

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

संस्कृत → प्राकृत → अपभ्रंश

↓

मागधी अपभ्रंश

↓

बिहारी हिंदी

↓

मैथिली | बिहारी | भोजपुरी | अंगिका

बिहारी हिंदी व प्रमुख बोलियाँ

बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय :-

① भोजपुरी :- प्रमुख व सर्वाधिक प्रचलित बोली जिसका प्रसार न केवल भागलपुर, बिहार व पूर्वी उत्तर प्रदेश में है बल्कि त्रिनिदाद टोबैगो, सहित कई प्रशांत महासागरीय द्वीपीय देशों में है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

~~विशेषताएँ~~ भोजपुरी हिंदी मे संध्यक्षरों का प्रयोग, ण की अनुपस्थिति, मूर्धन्य ष की जगह ख़ ल का प्रयोग प्रमुख ध्वनि की विशेषताएँ है। → क्ष → ख (लक्षण > लक्खन)

उदा० → अइरत, मइल
→ बालक
↳ ल ध्वनि का अधिक प्रयोग

व्याकरण के स्तर पर भोजपुरी मे तीन संज्ञाओं का प्रयोग, सर्वनामों मे तुम्हे, वाके, हमरी, हमरो जैसे विकास है।

~~का~~ ~~कि~~ भोजपुरी हिंदी मे हम का हम लोग, तुम का तुम लोग हो जाता है।

क्रिया के स्तर पर वर्तमान मे 'ते' रूप, भूतकाल मे 'ले' रूप व

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भविष्य के लिए 'ब' रूप का प्रयोग होता है।

उदा० – देखत, देखल, चलब

देशी भोजपुरी शब्दों का प्रयोग यहाँ की विशिष्टता है।

मैथिली :- विद्यापति की पदावली व जॉर्ज ग्रियर्सन की 'मैथिली क्रिस्टोमैथी' मे इस भाषा का विकास मिलता है।

ध्वनि
- ↳ मैथिली प्रदेश मे
- ↳ निहथाकार प्रयोग होता
- ↳ ओ ध्वनि का अधिक प्रयोग
- ↳ 'ल' ध्वनि का प्रयोग, अकारांत होना।

उदा० – "ऐ सखि! देखल एक अपरूप।"

व्याकरण
- ↳ संज्ञा का एक ही रूप
- ↳ सर्वनाम के मैं, तो, ताको, हमोहें
- ↳ क्रिया मे 'ल' रूप, ब रूप

अंगिका की मूलत: इसी तरह की बोली है जिसमे जीवित स्वाभाविकता है।

(ग) हिंदी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हिंदी भाषा के विकास में वैसे तो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक सहित बहुविध कारकों की भूमिका रही लेकिन इनमें शुरुआती प्रयासों में ईसाई मिशनरियों ने अहम योगदान दिया।

ईसाई मिशनरियों का योगदान

- स्वयं द्वारा रचित गद्य
- उनकी प्रतिक्रिया में विकास

ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म के प्रचार व भारतीयों के ईसाईकरण के लिए यहाँ आनुभाविक

drishti | दृष्टि The Vision

तौर खड़ी बोली हिंदी को सर्व प्रमुख भाषा के तौर पर पाया।

तत्कालीन आधुनिक युग के प्रारंभ का दौर था जहाँ ब्रज भाषा का खड़ी बोली द्वारा प्रतिस्थापन जारी था।

इसी ~~समय~~ समय कविता की जगह उपन्यास, नाटकों ने ली तो अतः पद्य की जगह गद्य का विकास होने लगा।

मिशनरियों द्वारा ईसाई ग्रंथों का खड़ी बोली मे अनुवाद इनका मुख्य योगदान रहा, जो गद्य के विकास मे सहायक बना।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मिशनरियों की प्रतिक्रिया में विकसित सामाजिक सुधार आंदोलनों ने गद्य को अभूतपूर्व ऊँचाई प्रदान की।

भारतेंदु युग में भारतेंदु द्वारा न केवल पत्रकारिता बल्कि निबंध, नाटक में उल्लेखनीय योगदान रहा।

भारतेंदु की हरिश्चंद्र मैगजीन, 'नाटक' नामक निबंध, भारत दुर्दशा जैसे नाटक उल्लेखनीय हैं।

उनके मंडल के साथियों बालकृष्ण भट्ट का हिंदी प्रदीप (पत्रिका), 'साहित्य जनसमूह की चेतना का प्रतिबिंब है' (निबंध) सहित ब्राह्मण पत्रिका आदि का योगदान रहा।

धार्मिक सुधार आंदोलनों में आर्य समाज की रचनाएँ गद्य के (सत्यार्थ प्रकाश), ब्रह्मसमाज व सदस्यों द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार किया।

फलतः ईसाई मिशनरियों ने अकिंचन योगदान किया।

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

केशव के काव्य मे समग्र जटिलता को देखकर उन्हे कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।

जटिलता का मूल कारण ~~अर्थात~~ उन्हे परंपरा से मिली संस्कृत अभिज्ञता, विद्वता, विज्ञानता, इतिहास की क्षमता तथा इन सभी का अपने काव्य मे प्रयोग के कारण जटिलता पैदा हुई है।

जैसे - रामचंद्रिका, जहांगीर जसचंद्रिका, रसिकप्रिया आदि।

भाषायी कठिनता - रामचंद्र शुक्ल जी ने ~~मूलतः~~ केशवदास की भाषायी जटिलता की आलोचना की है, जहाँ शब्द-न्यूनता, पद-न्यूनता, अव्याप्ति जैसे दोष पाये जाते है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उदा० - सा / धा / री / धो
श्याम क्यों ! आदि।

~~कवित्व~~ क्लिष्टता - केशव के काव्य में ~~संवे~~ संवाद योजना को छोड़ दे तो कथानक योजना शिथिलता युक्त है, पात्रों का सही विकास नहीं है फलत: ~~चारित्र~~ कथानक व चरित्र योजना की चौपटता पाठक को बांध नहीं पाती है जैसा रामचरितमानस जैसे काव्य मे दिखता है।

संस्कृत की ~~प्रकाण्ड~~ प्रकाण्ड ज्ञानयुक्त आभिजात्यता इनके काव्य को सीमितता प्रदान करती है जैसे छंदों की ~~अधिक~~ अत्याधिक प्रयोग ने और अधिक जटिल बनाया है शुक्ल जी ने इन्हे 'छंदों का अजायबघर' कहा है।

पीतांबरदत्त ~~बर्थ~~ बड़थ्वाल ने उनकी भाषा मे जैसे माधुर्य से भार खाये बैठे होने का संकेत दिया है

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आधुनिक युग के नाटककार रामकुमार वर्मा ने प्रसाद की तरह इतिहास के कथानक को चुनकर वर्तमान समस्याओं का आधुनिक समाधान देने का प्रयास किया है।

उनका नाटक रचना मूलतः वर्तमान की समस्याओं यथा — गुलामी, आर्थिक दुर्दशा व सामाजिक पतन पर केंद्रित रहा।

नाटकों के चरित्रों के रूप में इतिहास के आरोपण से सांस्कृतिक-राष्ट्रवाद के विकास

drishti | दृष्टि The Vision

ने अहम योगदान दिया है।

रामकुमार वर्मा के

नाटकों के प्रायः सरल दृश्य-योजना, छोटे व छोटे तथा सजीव संवाद, भाषायी साधारणता उन्हें विशिष्ट बना देते हैं।

आधुनिक युग की तरह मौन की भाषा, व्यंग्य की भाषा व सांस्कृतिक उद्बोधन की ओजस्वी भाषा व शैली के राष्ट्र निर्माण में व हिंदी नाटक विकास में अहम योगदान दिया है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'अंधायुग' नाटक का महत्त्व।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

अंधायुग नाटक अपने समय की राजनीतिक जनित सामाजिक व धार्मिक विद्रूपताओं पर व्यंग्य कसता है।

भारतेंदु कृत अंधायुग नाटक लोगों के नवजागरण सहित राष्ट्रवादी चेतना का विकास करता है।

आसानी से मंच पर खेला जाने वाला यह नाटक राजनीतिक विलासिताओं, भोग व राजनीति की जवाबदेहरहित दशा का स्पष्ट अंकन है।

पैसे का महत्व सहित

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

आम आदमी का शोषण तंत्र ने पिसने का मार्मिक चित्रण नहीं किया गया है।

यह हमारी सामाजिक पिछड़ापन व राजनीतिक विसंगति पर चोट करने में सफल होता है।

युवाओं में नव जागरण प्रेरणा पैदा कर देश के विकास को बढ़ाने की प्रेरणा देता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निराला छायावादी कवि है तुलसीदास पर कविता 'तुलसीदास' के रूप में लिखी।

कविता का प्रतिपाद्य :-

तुलसी के समाज को जोड़ने वाले व लोकमंगल की साधनावस्था वाले स्वरूप की भली-भाँति प्रशंसा की है।

यद्यपि उनकी महिला व दलित वर्ग के प्रति सोच पर तीखा व्यंग्य भी कसा है।

"ढोल गँवार पशु शूद्र नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी।"

यद्यपि उनकी समन्वय चेतना की विराटता की पुष्टता की है ताकि सभी लोगों मे समन्वय बढ़े।

drishti | दृष्टि The Vision

(ङ) तारसप्तक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तारसप्तक पत्र का प्रकाशन हिंदी साहित्य के विकास में निर्णायक रहा है।

तारसप्तक में छपे लेख व कविताओं ने हिंदी में एक नये युग का सूत्रपात किया है।

'हिंदी नये चाल में ढली 1873' से शुरु हुआ यह प्रभाव दिखाता है कि हिंदी कायावी द्वैत (ब्रज vs खड़ी, संस्कृत vs फारसी) से उबरकर हिंदुस्तानी हिंदी का रूप धारण करती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तारसप्तक में छपी रचनाओं के द्वारा ही नई कहानी आंदोलन का विकास प्रारंभ हुआ।

तारसप्तक ने नवजागरण के दौर में हिंदी गद्य के विकास व हिंदी के प्रचार-प्रसार, मूल्यांकन व सुधार में निर्णायक योगदान दिया।

तारसप्तक-I व तारसप्तक-II ने हिंदी को खड़ी बोली से परिनिष्ठित हिंदी के विकास तक साथ दिया है।

drishti | दृष्टि The Vision

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

7. (क) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) पद्माकर के श्रृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

8. (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' की उदात्तता पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

छायावाद वह युग है जहाँ पर स्वच्छंदतावाद का क्रमिक विकास उच्चता पर पहुँच गया है।

छायावादी कविताओं पर बहुविध आरोप व प्रत्यारोप सदैव चर्चा में रहा विषय है, फिर भी इनकी सौंदर्य-चेतना की ~~स्वच्छ~~ उदात्तता प्राय: सर्वत्र स्वीकृत तथ्य है।

छायावाद के प्रमुख कवियों में सुर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, 'नगेंद्र', महादेवी वर्मा आदि का नाम प्रमुख है।

सौंदर्य-चेतना से तात्पर्य सौंदर्य

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

के दृष्टिकोण व उसके स्वरूप से है।

छायावाद की सौंदर्य चेतना उदात्तता से भरपूर है।

इस पक्ष से देखें तो इस धारा के लेखकों ने सुंदरता को अति उच्च स्तर प्रदान किया है।

जैसे- प्रसाद के कामायनी मे श्रद्धा का वर्णन।

जिसके सौंदर्य मे संपूर्ण का आभाव का समावेश हो जाये ऐसा सौंदर्य रूप दिया है।

सौंदर्य वर्णन मे प्रकृति का समावेश अति सुंदर रूप मे उद्दीपन भाव के रूप मे किया है।

" हिमाद्रि तुंग श्रृंग पे" कहा है तो कहीं " मधुमय आसमान से उतर

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रही है परी धीरे धीरे धीरे'! यह प्रकृति का सुंदरतम रूप दिया है
राम की शक्तिपूजा में भी वानरों की सेना का प्रवेश इस संपूर्ण चराचर जगत का सुंदरीकरण करता है।

इस धारा के रचनाकार मानते हैं कि सुंदरता आत्मनिष्ठ होती है जो देखने वाले के व्यक्तित्व पर निर्भर करती है।

इनका सौंदर्य चेतना न केवल मानव व प्रकृति की सुंदर अभिव्यंजना करता है बल्कि कामायनी में मिलाप का समागीकरण कर सुंदर निरसतावाद पैदा करता है।

यद्यपि मार्क्सवादी रचनाकार

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यथा मुक्तिबोध आदि ने भाग गुलाब को महत्त्व देना व प्रकृति का व सुंदरता का वास्तविक नहीं बल्कि काल्पनिक चित्रण पर प्रश्न उठाया है।

[redacted] छायावाद की सौंदर्य चेतना को अनुदात्त बताकर वे कहते हैं यहाँ मोर तो है लेकिन मकड़ी नहीं है।

यद्यपि कुछ सीमाओं को छोड़ जाने व रचनाकार के दृष्टिकोण को समझा जाने तो छायावाद के सौंदर्य को उदात्त मानने में कोई समस्या नहीं है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के रचना-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मोहन राकेश ने अपने नाटकों आषाढ़ का एक दिन से आगे बढ़कर 'आधे-अधूरे' के रूप में एक वर्तमान यथार्थवादी उपन्यास रचा जिसमें इतिहास तत्व की जगह संपूर्णता यथार्थ को ही महत्व दिया गया।

आधे-अधूरे नाटक का रचना वैशिष्ट्य :-

चरित्र योजना :- मात्र 5 चरित्र है, घटना रहित नाटक है जहाँ चरित्रों के अंतर्मन को गति प्रदान की गई है। इनके मन में आने वाले चिंतन, मनन, द्वंद्व को महत्व दिया है।

कथानक योजना : यथार्थवाद की तरह बिखरा हुआ कथानक है फिर भी इसके चुस्त व छोटे संवाद, वार्तालाप इसे प्रभावी बनाते हैं।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

भाषा: भाषा के स्तर पर मौन की भाषा, संकेत की भाषा, वातावरण का प्रयोग किया है। जो मूलत: मोहन राकेश के सभी नाटकों की उपलब्धि है लेकिन यहाँ पर पात्रों के अंतर्जीवन की व्याख्या के लिए अधिक प्रभावी है।

दृश्यविधान: सरल दृश्य विधान जहाँ मात्र एक कमरा, कुछ पर्दे व कुछ सोफों की जरूरत है। पूरी रचना मे एक ही अंक है।

संवेदना: मूलत: कहानी महेन्द्रनाथ व इनकी पत्नी सावित्री की है जो विवाहित है लेकिन मन से साथ नहीं है, एक दूसरे से व विवाह के खोखलेपन से असंतुष्ट है लेकिन

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कहीं अन्यत्र भी असंतुष्टि देखते हैं व अन्यत्र प्रयोग पर असंतुष्ट हो रह जाते हैं। फलत: साथ रहने को ~~मजबूर~~ मजबूर है।

फलत: यथार्थवादी कथानक है जिसमे लहरों के राजहंस की तरह इतिहास का सहारा नहीं है।

आषाढ़ का एक दिन व लहरों के राजहंस से विशिष्टता व अंतर :—

* इतिहास का सहारा नहीं लेना
* यहां नायक अंत मे लौट आता है जबकि अन्य दो मे नहीं
* यथार्थवादी रचना जबकि कथानक
* परिवेश → मौन, संकेत की भाषा को महत्व।

फलत: आधे-अधूरे मोहन राकेश की नाट्य दृष्टि 'मानवतत्व' व 'शब्दतत्व' को विशिष्ट रूप से पूर्णता देता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'प्रगतिशील चेतना' की दृष्टि से 'नाथ-साहित्य' पर विचार करते हुए उसका साहित्यिक महत्त्व बताइए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

वाममार्गी सिद्धों के विपरीत संयममार्गी नाथों द्वारा 10वीं सदी से 13-14वीं सदी तक अपनी धार्मिक मान्यताओं के प्रचार के लिए अर्धमागधी अपभ्रंश में रचित साहित्य को नाथ साहित्य कहा जाता है।

जैसे - चर्पटीनाथ, जलंधरनाथ, गोरखनाथ मत्स्येंद्रनाथ आदि की रचनाएँ।

नाथ-साहित्य की प्रगतिशील चेतना : —

① संयममार्ग - सिद्धों के पंचमकार भोग की जगह अति संयम को महत्त्व देना।

जैसे - "गोरख पातरि आगे नाचे, पीछे सहज अखाड़ा।"

② धार्मिक आडंबरों पर प्रगतिशील चोट : —

तत्कालीन समाज में व्याप्त आडंबरों पर चोट कर सुधार की दृष्टि प्रदान की।

" जोहि मणा पवन न संचरई रवि ससि नाहि पवेस"

drishti दृष्टि The Vision

ने ईश्वर प्राप्ति के लिए कठोर मार्ग बताते हैं न कि पंडितो की तरह पूजा व आडम्बर को।

यद्यपि इन्होंने महिला को भोग नहीं माना जो सिद्धों की तुलना में प्रगतिशीलता है लेकिन नारी को त्याज्य मानना इनकी प्रगतिशीलता पर प्रश्न चिह्न है।

नाथ साहित्य का साहित्यिक महत्व :-

कथ्य के स्तर पर नाथो ने सामाजिक प्रगतिशीलता का समावेश किया जो स्वत: संतकाव्यधारा का निर्णायक आधार बना जिसे कबीर सहित सभी संतो मे देखा जा सकता है। उदा०-

"पोथि पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।"

शिल्प के स्तर पर दोहा, चर्यापद, चौपाई का समावेश करना जो सूर के पदों व मीरा के काव्य मे परिलक्षित होता है। भाषाओं मे खड़ी बोली का आरंभिक विकास व कथ्य को रूप प्रदान किया है। जैसे-

"नौ लख पातरि आगे नाचे, पीछे सहज अखाड़ा
ऐसो मन लौ जोगी खेलै, अंतरि बसै भंडारा।।"

इसमे नौ जैसे प्रयोग खड़ी के नाचे, खेले जैसे ब्रज के प्रयोग है।

वास्तत: कबीर का व्यक्तित्व की अक्खड़ता व असामाजिकता नाथयोग का ही परिणाम है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti दृष्टि The Vision

Space for Rough Work